

# कविता-कौमुदी

दूसरा भाग- हिन्दी



सम्पादक

रामनरेश त्रिपाठी



किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मतः ।  
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥



प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

स्करण (वर्तित)	}	फाल्गुन, १९८३	}	मूल्य ३)
-------------------	---	---------------	---	----------